फसलों पर राजयोग मेडिटेशन के प्रभाव से, डेढ़ गुना बढ़ गया उत्पादन

यौगिक खेती से लहलहा रही करेला की फसल।

मप्र देवास जिले के ग्राम पुंजापुरा के किसान ने किया कमाल, ब्रह्माकुमारीज़ के ग्राम विकास प्रभाग की नई खोज शाश्वत जैविक-यौगिक खेती

शिव आमंत्रण ■ देवास (मप्र)

पुंजापुरा (देवास, मप्र)। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इंसानों की तरह पेड़-पौधे भी हमारी भावनाओं और संवेदनाओं को महसूस करते हैं। वह भी तनाव और खुशी महसूस करते हैं। यदि परिवार के सदस्यों की तरह उन्हें भी प्यार-दुलार करें और सकारात्मक चिंतन के साथ शुभ बायब्रेशन दें तो वह भी खुशी से झूम उठेंगे।

मध्यप्रदेश के देवास जिले के ग्राम पुंजापुरा के किसान नरेन्द्र हम्मड़ खेती में नए-नए प्रयोग के लिए पूरे जिले में प्रसिद्ध हैं। हाईटेक खेती करने पर उन्हें वर्ष 2016 में उन्नतशील किसान का जिलास्तरीय अवार्ड भी मिल चुका है। बचपन से ही आध्यात्मिकता की ओर रुझान होने और राजयोग मेडिटेशन के दौरान एक दिन उन्हें ख्याल आया कि जब राजयोग मेडिटेशन से हमारे विचार बदल सकते हैं, इंसान के स्वभाव-संस्कार सकारात्मक हो सकते हैं तो इसका प्रयोग फसलों पर भी किया जाए। नरेन्द्र ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माउंट आबू द्वारा चलाए जा रहे जैविक-यौगिक खेती प्रोजेक्ट के तहत प्रशिक्षण लेकर वर्ष 2015 में अपनी जमीन पर जैविक-यौगिक खेती की शुरुआत की। पहले साल अच्छे परिणाम मिलने पर वह खुशी से झूम उठे। उन्होंने साल पांच एकड़ जमीन पर गेहूं, चना और सब्जी पर जैविक-यौगिक खेती के तहत प्रयोग किए। जब फसल आई तो रासायनिक फसल से उत्पादन डेढ़ गुना अधिक रहा।

एक एकड़ में निकला 14 क्विंटल गेहूं: नरेन्द्र ने बताया गेहूं-चने की बोवनी करने के पहले बीज को ध्यान कक्ष में रखकर पहले योग के माध्यम से चार्ज किया। बाद में रोज खेत में बने ध्यान कक्ष में बैठकर सुबह 9 बजे से 11 बजे तक और शाम को 6.30 बजे से 7.30 बजे तक योग के माध्यम से फसल को शुभ संकल्प दिए।

योग के प्रयोग से लहलहाई करेला-गिलकी की फसल, कम लागत में कमा रहे ज्यादा मुनाफा

योग के माध्यम से गिलकी की फसल को शुभ बायब्रेशन देते किसान नरेन्द्र हम्मड़ व ब्रह्माकुमारी बहनें।

इनसेट: योग के प्रयोग के गिलकी का जहां ज्यादा उत्पादन हुआ वहीं ये खाने में स्वादिष्ट और पौष्टिक भी थी।

जानिए, पांच एकड़ में में इतना रहा मुनाफा

- गेहूं की फसल दो एकड़ में लगाई। एक एकड़ में 14 क्विंटल उपज निकली। कुल 28 क्विंटल गेहूं का उत्पादन हुआ।
- चना की फसल भी दो एकड़ में लगाई एक एकड़ में 7 क्विंटल उपज निकली। कुल 14 क्विंटल चने का उत्पादन हुआ। सबसे बड़ी बात चने का दाना चमकदार साइज में भी बड़ा रहा।
- एक एकड़ में चार प्रकार की सब्जी- लौकी, करेला, गिल्की और भिंडी लगाई। इसमें भी सिर्फ जैविक खाद का प्रयोग किया और योग से शुभ बायब्रेशन दिए। सभी सब्जियां जहां स्वादिष्ट निकलीं, वहीं साइज भी रासायनिक तरीके से उगाई गई सब्जी से बड़ी रही।

फसलों से की बच्चों की तरह बात...

नरेन्द्र के मुताबिक मैं रोज फसलों से बच्चों की तरह प्यार-दुलार करते हुए उनसे बातें करता था। उनसे दुःख-दर्द सांझा करता और उन्हें बहुत ही स्नेह करता हुए दुलारता था। साथ ही रोज मेडिटेशन में के माध्यम से शुभ बायब्रेशन देता था कि मेरी फसल सबसे अच्छी है। सभी फसलें स्वस्थ और तेजी से बढ़ रही हैं। फसलों में स्वादिष्ट दाना लग रहा है। ये तो मेरे बच्चों जैसी है और मैं इन्हें सबसे ज्यादा प्रेम करता हूं।

नीम का अर्क छिड़कने से सारे कीट भाग गए...

पहले खेती में बहुत रासायनिक खाद और पेस्टीसाइड का उपयोग करते थे लेकिन मन में अजीब का दर्द होता था कि हम अपने ही हाथों से अपनी फसलों को जहर बना रहे हैं। इसके चलते आर्गेनिक विधि अपनाई और नीम की पत्तियों का अर्क तैयार किया। इसे फसल पर छिड़काव किया तो सारे कीट उसकी दुर्गंध से ही भाग गए।

खेतीहर मजदूरों का भी व्यसन छुड़वाया...

नरेन्द्र का मानना है कि खेती में काम करने वाले एक-एक व्यक्ति की अच्छी-बुरी भावनाओं फसलों पर प्रभाव पड़ता है। इसके चलते जो मजदूर काम के दौरान गुटखा खाते थे या अन्य व्यसन करते थे उनका व्यसन भी छुड़वाया। इसके लिए उन्हें ज्यादा पैसा दिया। इससे मजदूरों में भी सकारात्मक बढ़ी और अब तो प्रेम-प्यार और शांति से ही सारा काम हो जाता है। न किसी को डांटना पड़ता है।

सरकार ने हाईटेक किसान होने से विदेश भेजा...

खेती में नए-नए प्रयोग करने और हाईटेक किसान होने से सरकार ने नरेन्द्र का चयन कर वर्ष 2016 में विदेश यात्रा पर भेजा। इस दल में भारत से 400 किसान शामिल रहे। इस दौरान उन्होंने इजराइल और जार्डन में खेती की नई-नई पद्धति को जाना। इजराइल खेती के मामले में बहुत हाईटेक देश है। वहां बारिश कम होती है ऐसे में एक-एक बूंद का सदुपयोग कैसे करें ये सबक हम इजराइल से ले सकते हैं।

वर्ष 2014 में निकला 15 किलो का तरबूज

किसान नरेन्द्र ने वर्ष 2014 में अपनी पांच एकड़ जमीन पर तरबूज की फसल लगाई। इसमें सिर्फ जैविक खाद का ही उपयोग किया। साथ ही योग का प्रयोग भी किया। इससे फर्टिलाइजर और पेस्टीसाइड में जो पैसा खर्च करते थे वह बच गया। प्रतिदिन राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से फसल को शुभ प्रकम्पन देते थे। मन की भावनाओं को पेड़-पौधे कैच करने लगे। इससे फसल में तेजी से ग्रोथ हुई और जब उसमें फल लगा तो वह स्वादिष्ट और चमकदार था। कंपनी ने जो बीज दिया था तो उसका अधिकतम 4 किलो तक का फल लगना बताया था लेकिन मेरे यहां अधिकतम 15 किलो तक का तरबूज निकला। यह देख आसपास के किसानों को भी आश्चर्य हुआ।

किसानों के लिए वरदान बनी शाश्वत जैविक-यौगिक पद्धति

हजारों किसान कमा रहे अच्छा-खासा मुनाफा, योग के प्रकम्पन और जैविक खाद से उगा रहे फसल

शिव आमंत्रण, आबू रोड। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हम अपने श्रेष्ठ और सकारात्मक विचारों, शुभ संकल्पों के माध्यम से भी खेती कर अच्छा-खासा मुनाफा कमा सकते हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ग्राम विकास प्रभाग ने खेती की एक नई पद्धति का विकास किया है। इसे नाम दिया गया है शाश्वत यौगिक खेती। इसकी विशेषता ये है कि इस पद्धति में सिर्फ जैविक खाद का प्रयोग करते हुए फसल को राजयोग मेडिटेशन के माध्यम से शुभ संकल्प, श्रेष्ठ विचार और शुभ भावनाएं फसल को दी जाती हैं। साथ ही फसल को कैसे हम बच्चों की तरह प्यार-दुलार कर उसका विकास कर सकते हैं। इसके लिए किसान भाइयों का ब्राकायदा संस्था के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय माऊंट आबू में प्रशिक्षण भी दिया जाता है। इस प्रशिक्षण को लेकर अब तक हजारों किसान भाइयों ने अपनी फसल का उत्पादन शाश्वत जैविक-यौगिक खेती के माध्यम से करके अच्छा मुनाफा कमाया है।

1996
ग्राम विकास प्रभाग की स्थापना

800
से अधिक किसान भाई कर रहे खेती

2007
से यौगिक खेती के प्रोजेक्ट पर काम शुरू

16
सूत्रीय एजेंडा गांवों के सम्पूर्ण विकास के लिए

शाश्वत यौगिक खेती क्यों जरूरी हैं?

आज रासायनिक खाद, फर्टिलाइजर, पेस्टीसाइड, कीटनाशकों के उपयोग से फसल की पैदावार तो बढ़ी है वहीं इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। हम जो अनाज, दाल, सब्जी, फल आदि खा रहे हैं उसमें से पौष्टिकता गायब हो चुकी है। स्वादिस्ट पौष्टिक, शुद्ध, सात्विकता के अभाव में मनुष्य का मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य खराब होता जा रहा है। सम्पूर्ण तन-मन के स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक तथा संतुलित भोजन का होना जरूरी है। आदिकाल में मनुष्य निरोगी काया, दीर्घायु प्राप्त करते थे। अतः हमें पौष्टिक एवं सात्विक अन्न प्राप्त हो सके इसके लिए जैविक और यौगिक खेती एक कारगर कदम सिद्ध होगी। क्योंकि जब हम श्रेष्ठ व सकारात्मक बायब्रेशन से उत्पन्न अन्न ग्रहण करेंगे तो हमारे विचार भी श्रेष्ठ और सकारात्मक होंगे।

ये नए युग के लिए नया कदम है

यह नए युग के लिए नया कदम है। यौगिक खेती के माध्यम से सैकड़ों किसानों की जिंदगी बदली है। इससे हम कम खर्च में अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। यौगिक खेती के लिए सबसे पहले हमें राजयोग का अभ्यास सीखना जरूरी है।

बीके राजू भाई, मुख्यालय संयोजक, ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़

यहां करें संपर्क बीके सुमंत, मुख्यालय संयोजक, ग्राम विकास प्रभाग, मो. 7597546732, [illegible]